भारत के सांस्कृतिक प्रदेश

संस्कृति मानव की सर्वोत्तम पूँजी/सम्पदा है, जिसके माध्यम से वह पीढ़ी-दर-पीढ़ी निरंतर आगे उन्नति के पथ पर अग्रसर है तथा प्रगति के नये-नये प्रतिमान स्थापित करने में सफल हुआ है। संस्कृति के आधार पर ही मानव प्राणि-जगत में शीर्षस्थ है। संस्कृति के आधार पर ही एक मानव अथवा समाज को दूसरे मानव अथवा समाज से पृथक किया जाता है अथवा पहचान की जाती है।

संस्कृति शब्द का प्रयोग व्यापकता लिए हुए है तथा लगभग सभी सामाजिक विज्ञानों में इसका प्रयोग विविध सन्दर्भों में किया जाता है, परन्तु सभी सामाजिक विज्ञान इसे विशुद्धि का प्रतीक मानते हैं। यह विशुद्धि मानवीय प्रयासों से उद्भूत प्राकृतिक साधनों के परिष्कार एवं परिमार्जन से संबंधित है।

संस्कृति : सुन्दर बनाना, परिशुद्ध करना, संस्कार करना, सुधारना, पूर्णता प्रदान करना आदि।

"संस्कृति मूल्यों, प्रणालियों, भावनात्मक अवस्था, तथा बौद्धिक अभियानों का विषय है। इस लिए संस्कृति सभ्यता का प्रतिपाद है। यह हमारे रहने, सोचने के तरीकों, कार्य-कलापों, कला, साहित्य, धर्म, मनोरंजन एवं आनंद में हमारे व्यवहार की अभिव्यक्ति है" (Maciver and Page)।

संस्कृति की विशेषताएँ

1. संस्कृति मानव निर्मित है.
2. संस्कृति मानव के सीखे हुए व्यवहार प्रतिमानों का योग है.
3. संस्कृति हस्तांतरित होती है.
4. प्रत्येक समाज की अपनी विशिष्ट संस्कृति होती है.
5. संस्कृति समाज की भौगोलिक एवं सामाजिक दशाओं एवं आवश्यकताओं से प्रभावित होती है.
6. मानव समुदाय संस्कृति को आदर्श मानते हुए वैसा ही आचरण करते हैं
7. संस्कृति समाज की देन होती है, व्यक्ति विशेष का नहीं.
8. संस्कृति देश, काल एवं परिस्थिति के अनुसार परिवर्तनशील होती है.
9. मानव अपनी शारीरिक, मानसिक तथा सांस्कृतिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु संस्कृति का निर्माण करता है.
10. संस्कृति भौतिक (material) अथवा अ-भौतिक (non-material), दोनों प्रकार की हो सकती है.

सांस्कृतिक विकास की अवस्थायें

मानव सभ्यता के आरंभ के साथ ही संस्कृति का विकास आरम्भ हुआ। इसकी विकास अवस्था का निर्धारण विकास-स्तर, प्रमुख व्यवसाय, सभ्यता के विकास-क्रम आदि के आधार पर ~~[illegible]~~ किया जाता है:

विकास-स्तर के आधार पर

1. अरण्य अवस्था - प्रारंभिक अवस्था, वनवासी
2. बर्बर अवस्था - धातु एवं मिट्टी के बर्तन एवं लोहे, कांसा का औजार बनाना सीखा, आखेट से पशुपालन एवं कृषि की ओर अग्रसर.

3. सभ्य अवस्था - आधुनिक अवस्था।

व्यावसायिक प्रधानता के आधार पर

1. आखेट एवं संग्राहक अवस्था।
2. पशुचारण अवस्था
3. कृषि अवस्था
4. औद्योगिक एवं तकनीक अवस्था

मानव-सभ्यता के विकास के आधार पर

(i) पूर्व-पाषाण काल : आदिकालीन अवस्था
(ii) पुरा-पाषाण काल : पत्थर के औजार (अनगढ़)
(iii) नव-पाषाण काल : आग एवं पहिये का आविष्कार, कृषि एवं पशुपालन
(iv) ताम्र-युग : ताँबा का औजार, कृषि में पशुओं का उपयोग।
(v) काँस्य-युग - ताँबा + टिन = काँसा, नदी-घाटी सभ्यता — सांस्कृतिक उद्गम-स्थल
(v) लौह-युग - ईसा-पूर्व 2000 से आरंभ
भारत में ईसा-पूर्व 1000 से आरंभ
(vi) आधुनिक-युग : ~~औद्यो~~ औद्योगिक एवं तकनीकी क्रान्ति से।

सांस्कृतिक प्रदेश की संकल्पना

"वह सतत् भू-भाग, जिसके अन्तर्गत किसी एक सांस्कृतिक तत्व अथवा अनेक तत्वों की समांगता मिलती है, सांस्कृतिक प्रदेश कहे जा सकते हैं"। एक सांस्कृतिक प्रदेश किसी सांस्कृतिक परिमंडल का उप-विभाग होता है। सांस्कृतिक प्रदेशों का निर्धारण सांस्कृतिक तत्वों की सूक्ष्म समांगता के आधार पर किया जाता है।

सांस्कृतिक प्रदेश के सीमांकन का आधार

सांस्कृतिक परिमंडलों के सीमांकन के लिए जिन सांस्कृतिक तत्वों को मापदंड के रूप में प्रयोग किया जाता है, उन्हीं तत्वों को सांस्कृतिक प्रदेशों के सीमांकन में भी प्रयोग होता है, परन्तु परिमंडल किसी सांस्कृतिक तत्व अथवा तत्वों की स्थूल समानता पर और प्रदेश का निर्धारण सूक्ष्म समानता पर आधारित होता है।

उदाहरण:
भाषाई समानता (स्थूल समानता) के आधार पर :
(i) आंग्ल (English) अमेरिका
(ii) लैटिन अमेरिका

लैटिन अमेरिका का निर्धारण लैटिन भाषा की स्थूल समानता के आधार पर किया गया है जिसका विस्तार मैक्सिको से लेकर सम्पूर्ण दक्षिणी अमेरिका तक है, जिसके अन्तर्गत जीवन-पद्धति, आर्थिक विकास स्तर आदि में महत्वपूर्ण क्षेत्रीय भिन्नता द्रष्टव्य है।

एक सांस्कृतिक प्रदेश, दूसरे से सांस्कृतिक प्रदेश को सूक्ष्म सांस्कृतिक समानता के आधार पर विभक्त किया जाता है तथा जिस रेखा के सहारे दो भिन्न-भिन्न सांस्कृतिक तत्व मिलते हैं उसे सांस्कृतिक प्रदेश की सीमारेखा

माना जाता है, जो सामान्यतया एक रेखा न होकर संक्रमण पेटी के रूप में होती है जहाँ पर दोनों सांस्कृतिक लक्षण मिश्रित रूप में मिलती हैं।

सीमांकन के कारक / तत्व:

(i) जीवन पद्धति (Way of life): एक प्रदेश के अन्तर्गत मनुष्यों के जीवन-यापन की पद्धति लगभग समान रहती है।

(ii) तकनीकीय विकास-स्तर: तकनीकी विकास का सीधा संबंध आर्थिक विकास स्तर से होता है।

(iii) धार्मिक विश्वास: धर्म प्राचीन काल से ही मानव संस्कृति का पोषक, वाहक एवं नियामक रहा है, जिसका प्रभाव मनुष्यों के आचार-विचार, रीति-रिवाज, रहन-सहन, खान-पान, परम्पराओं आदि पर पड़ता है।

(iv) भाषा: संस्कृति के प्रसार का सशक्त माध्यम. भाषा के माध्यम से अन्य अन्य का ग्रहण/सम्पर्क संभव.

(v) प्रजातीय समूह: विश्व में विविध प्रजातीय समूह हैं, परन्तु विभिन्न सभ्य समाजों में दीर्घकालीन सम्पर्क-प्रक्रिया से प्रजातीय मिश्रण एक सामान्य घटना है। अनेक आदिम जातियाँ आज भी शुद्ध प्रजातीय रूप में विद्यमान हैं।

(vi) जीवन-दर्शन (Attitude of Life): विश्व के विभिन्न भागों में जीवन के प्रति मानव दृष्टिकोणों में पर्याप्त भिन्नता मिलती है, जो उसके जीवन-पद्धति, धर्म, प्रथाओं आदि के रूप में परिलक्षित होती है
अफ्रीका - प्राकृतिक आधारित मानव दृष्टिकोण.
प० यूरोप एवं संयुक्तराज्य - भौतिकवादी दृष्टिकोण.

भारतीय संस्कृति

भारतीय संस्कृति एवं परम्परा के विरासत की जड़ें काफी गहरी एवं मजबूत हैं, जिस पर ऐतिहासिक काल से ही धार्मिक मनीषियों की सोच एवं दर्शन का व्यापक प्रभाव देखने को मिलता है। सहिष्णुता, अहिंसा एवं वसुधैव कुटुम्बकम् भारतीय संस्कृति का स्पष्ट प्रकटीकरण है। रामायण एवं महाभारत जैसे महाकाव्यों में उल्लेखित दृष्टांतों का स्पष्ट प्रभाव भारतीय संस्कृति पर पड़ा है।

संस्कृति एक ~~भारत~~ गत्यात्मक पर्याय है, जिसमें स्थानिक एवं कालिक परिवर्तन अपरिहार्य है। प्राचीन काल से ही भारतीय संस्कृति यहाँ की भौगोलिक दशाओं द्वारा अनुकूलित, पुष्पित एवं पल्लवित - कृषि-प्रधान रही है। भारत की संस्कृति कुछ अपने विशिष्ट लक्षणों द्वारा गुंजायमान है जो इसे अन्यों से भिन्नता प्रदान करता है:

(i) भारत, गाँव की संस्कृति को व्यक्त करता है;

(ii) भारत, कृषि एवं ग्रामीण संस्कृति का प्रतिनिधित्व करता है;

(iii) भारतीय संस्कृति में आर्थिक रूप से कम सम्पन्न लोगों की बहुलता है जो जाने-अनजाने सरल जीवन जीने को विवश है;

(iv) भारत ~~व~~ धार्मिक बहुलता की संस्कृति संजोये है;

(v) भारत की संस्कृति पर लगभग सभी धार्मिक विचारों का प्रभाव स्पष्ट है;

Scanned with CamScanner

(vii) भारतीय संस्कृति पर हिन्दुत्व का स्पष्ट प्रभाव दृष्टिगोचर है;

(viii) स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद के काल में भारतीय संस्कृति, पाश्चात्य सांस्कृतिक रीति-रिवाजों द्वारा संशोधित एवं प्रभावित होने की प्रक्रिया से गुजर रही है;

(viii) वर्तमान समय में भारत की संस्कृति इण्डिया एवं भारत के मध्य द्वन्द्वात्मकता से गुजर रही है;

(ix) आधुनिक युवा वर्गों में बढ़ती गतिशीलता एवं संचार सुविधाओं के कारण प्राचीन विरासत में उनकी आस्था कम हो रही है; आदि।

सांस्कृतिक प्रदेश का वर्गीकरण।

ऐतिहासिक विभाजन	आधुनिक विभाजन
आधार: 1. प्रजातीय संरचना में भिन्नता। 2. उत्पत्ति क्षेत्रों में भिन्नता।	1. शारीरिक विशेषताएँ 2. भाषा 3. धर्म
1. आर्यन	1. तिब्बती मंगोलॉयड बौद्ध
2. द्राविडियन	2. कश्मीर घाटी
3. आस्ट्रेलॉयड	3. सिक्ख प्रदेश
4. मंगोलायड	4. हिन्दू-राजो आर्यन
5. नार्डिक	5. पूर्वी आदिवासी
	6. मध्य आदिवासी
	7. द्रविड़-हिन्दू
	8. मलयालम
	9. ईसाई प्रधान गोआ।

प्राचीन विभाजन।

1. आर्यन: मध्य भारत के मैदानी प्रदेश में रहने वाले कृषि-प्रधान संस्कृति वाले लोगों को रिसले (Herbert Risley) ने आर्यन कहा है, जो वस्तुतः कई प्रजातियों के मिश्रण से उत्पन्न है। ये उत्तरसबिया से आये एवं यहाँ पर कृषि का विकास किया। आर्यों की मान्यता के अनुसार हिन्दू संस्कृति का विकास हुआ। Eastern Punjab, Rajasthan and Kashmir. Most of the people have long heads and prominent noses. They are tall, fair complexion and eyes are of dark colour.

2. द्राविडियन: रिसले के अनुसार मध्य भारत के पठारी भागों में रहने वाले लोगों की संस्कृति ही द्राविडियन संस्कृति थी। ये भारत के मूल निवासी माने जाते हैं। परन्तु; आर्यन संस्कृति अधिक संगठित एवं अपेक्षाकृत विकसित शस्त्रों से सम्पन्न थे, अतः द्रविड़ क्षेत्र को अपने अधिकार में ले लिया जिससे द्रविड़ संस्कृति द० भारत की ओर पलायन कर गई। They have dark complexion, dark eyes, short stature, long head and broad nose.

3. आस्ट्रेलॉयड: गुहा के अनुसार आस्ट्रेलॉयड प्रजाति के लोग मूलतः नीग्रो प्रजाति का ही परिमार्जित रूप है तथा इनके द्वारा भारत के दो सौ से अधिक

प्रजातियों का निर्माण हुआ है। इस प्रजाति के अन्तर्गत मुख्यतः संथाल, भील, गोंड, तथा मुण्डा आते हैं। इनका सर्वाधिक संकेन्द्रण मध्य भारत के पठारी भागों में हुआ है। हालाँकि, इनके स्थानिक वितरण के फलस्वरूप इन सबकी अपनी विशिष्टतायें विकसित हो गई है, फिर भी कुछ समानतायें स्पष्ट रूप में परिलक्षित है जैसे- धार्मिक अंध-विश्वास, मूल व्यावसाय, भूत-प्रेत, वृक्ष-पूजा।

4. नॉर्डिक: पंजाब, हरियाणा, राजस्थान आदि। कृषि-प्रधान संस्कृति का विकास, परन्तु लड़ाकू प्रवृत्ति। इनका दूसरे प्रजातियों के साथ काफी मिश्रण हुआ है जिससे नार्डिक एवं आर्यन के मध्य अंतर स्थापित करना कठिन कार्य है। पुनः धर्म का भी प्रभाव (सिक्ख धर्म)।

5. मंगोलॉयड: मंगोलॉयड संस्कृति के लोग उत्तर-पूर्वी भारत एवं हिमालय पर्वतीय भागों में अधिवासित हैं। झूम कृषि पर्वतीय ढलान के कारण विकसित हुई। पशुचारण प्रमुख व्यवसाय है। गोरखा, भूटिया, नागा, मिजो, गारो, खासी आदि जनजातियाँ इसी संस्कृति के हैं। आजादी के बाद इनके आर्थिक तथा सामाजिक जीवन में काफी बदलाव आया है।

आधुनिक वर्गीकरण

1. तिब्बती- मंगोलायड बौद्ध सांस्कृतिक प्रदेश

क्षेत्र: उत्तर-पूर्वी भारत एवं हिमालय पर्वतीय क्षेत्र।

धरातल- शीत → भेड़ पालन → ऊनी वस्त्र निर्माण

ढाल - झूम अथवा परंपरागत कृषि।

शारीरिक बनावट: छोटा कद एवं गठीला शरीर, रंग भूरा एवं पीला। आँखें छोटी एवं उभरी हुई; शरीर पर छोटे- छोटे बाल।

प्रमुख जनजातियाँ: इस सांस्कृतिक प्रदेश में कई जनजातियाँ अधिवासित हैं। जैसे: नागा, मिजो, गारो, गोरखा, भूटिया, गारो, खासी आदि।

विशेषताएँ: इस सांस्कृतिक प्रदेश के लोग बौद्ध धर्मावलंबी एवं सांस्कृतिक दृष्टिकोण से तिब्बत के करीब हैं। सिक्किम, लद्दाख एवं अरुणाचल में बौद्ध धर्म तथा गढ़वाल एवं गोरखा क्षेत्र में हिन्दू धर्म की प्रधानता है। भाषाई भिन्नता भी देखने को मिलती है, जैसे - लद्दाखी, डोंगरी, गढ़वाली, नेपाली आदि।

प्रारंभ में यह संस्कृति आधुनिकता से दूर थी, परन्तु पर्यटन उद्योग में विकास के साथ ये बाहरी संस्कृति के सम्पर्क में आए, जिससे इनकी सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक चेतना में विकास होता गया। नागालैण्ड, मिजोरम, मेघालय जैसे राज्यों का निर्माण इनके राजनीतिक चेतना की ही अभिव्यक्ति है।

2. काश्मीरी सांस्कृतिक प्रदेश

क्षेत्र - जम्मू- काश्मीर राज्य

भूगोल - पर्वतीय

धर्म - इस्लाम, हिन्दू एवं बौद्ध

प्रजाति - कॉकेशायड एवं मंगोलॉयड

Scanned with CamScanner

लम्बे हाथ-पैर.
शारीरिक बनावट: लम्बे-चौड़े, खड़ी नाक, पीत एवं गोरा वर्ण, लम्बे हाथ-पैर.

विशेषताएँ: जम्मू-कश्मीर प्राकृतिक सौन्दर्य के कारण (पर्यटन उद्योग का विकास) बाह्य सांस्कृतिक प्रदेशों के लोगों को अपनी ओर आकर्षित करता रहा है, जिससे इस सांस्कृतिक प्रदेश सांस्कृतिक मिश्रण भी देखने को मिलता है। कश्मीर घाटी एवं इसके आस-पास के पर्वतीय भागों में इस्लामी संस्कृति का विकास हुआ है जो कश्मीरी अथवा डोंगरी बोलते हैं। मकानों की संरचना, रहन-सहन एवं दैनिक कार्य-कलापों पर पर्यटन का स्पष्ट प्रभाव परिलक्षित होता है। घाटी प्रदेश फल एवं चावल की कृषि के लिए जानी जाती है तथा यही मुख्य कार्य-कलाप है। वर्तमान समय में सीमा-पार आतंकवाद के कारण यह सांस्कृतिक प्रदेश अशान्ति एवं आतंक के प्रदेश के रूप में परिवर्तित होता प्रतीत होता है।

3. सिक्ख सांस्कृतिक प्रदेश (हिन्दू-आर्यन संस्कृति का क्षेत्र)

विस्तार: पंजाब प्रान्त एवं इसके समीपवर्ती क्षेत्र.

धरातल: समतल मैदानी

धर्म: सिक्ख

शारीरिक बनावट: लम्बा कद, बड़ी-बड़ी दाढ़ी-मूँछें, सिर पर पगड़ी

प्रजाति: मुख्यतः हिन्दू-आर्यन प्रजाति

विशेषताएँ: सिक्ख संस्कृति की पहचान निम्न तत्वों से होती है:

(i) केश, कड़ा, कृपाण, कंघी, कच्छा (Uncut hair, steel bracelet, wooden comb, cotton underwear, steel sword)

(ii) सिर पर पगड़ी

(iii) धार्मिक प्रवृत्ति (अरदास)

(iv) कठिन परिश्रमी, परन्तु विनोदी प्रवृत्ति (12 बज गया)

(v) वीरता एवं योद्धा प्रवृत्ति आदि

4. इण्डो-आर्यन सांस्कृतिक प्रदेश

विस्तार: मध्य-पश्चिमी भारत का मैदानी भाग, प० राजस्थान, गुजरात तथा महाराष्ट्र के क्षेत्र. इस सांस्कृतिक पर आर्यों का सर्वाधिक प्रभाव पड़ा है। इस सांस्कृतिक प्रदेश के अन्तर्गत भाषाई आधार पर कई उप-क्षेत्र चिन्हित किये गए हैं, यथा-गुजराती, मराठी, राजस्थानी आदि.

धरातल: अर्द्ध-शुष्क समतल मैदानी

धर्म: हिन्दू, पारसी, जैन, यहूदी.

शारीरिक बनावट: मध्यम कद, औसत डील-डौल, रंग-साँवला, प्रजातीय मिश्रण के कारण शारीरिक विशेषताओं में घालमेल.

प्रजाति: मंगोलॉयड एवं निग्रॉयड.

विशेषताएँ: इस प्रदेश में प्रजातीय मिश्रण सर्वाधिक हुई है, जिसके फलस्वरूप बोली के आधार पर अनेक उप-संस्कृति क्षेत्र मिलते हैं। पुनः इसे पूर्व आर्द्र-उपार्द्र एवं पश्चिमी अर्द्ध-शुष्क-शुष्क संस्कृति में

Scanned with CamScanner

स्पष्ट अंतर दृष्टिगोचर होती हैं। उदाहरण के लिए राजस्थान के ग्राम्य-जीवन में ऊँट महत्वपूर्ण है जबकि द०-प० बिहार में बैलगाड़ी। प० राजस्थान एवं उ० प० गुजरात में बस्तियों का प्रारूप विकिर्ण है जबकि बिहार एवं द०-पू० उत्तर-प्रदेश में सघन बस्तियाँ हैं। बिहार-उत्तर-प्रदेश में चावल तो राजस्थान-गुजरात-हरियाणा में गेहूँ मुख्य भोजन है। बिहार तथा महाराष्ट्र के परिधान में पर्याप्त अंतर है।

यद्यपि यह सांस्कृतिक प्रदेश ग्रामीण संस्कृति का प्रतिनिधित्व करता है परन्तु स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद इस पर औद्योगिकीकरण-नगरीकरण एवं आधुनिकता का पर्याप्त पड़ा है। ऐतिहासिक रूप में मुगलों का प्रभाव-क्षेत्र होने के कारण कुछ खण्डों में इस्लामी संस्कृति का भी प्रभाव मिलता है, जैसे लखनऊ एवं भोपाल.

5. पूर्वी-आदिवासीय सांस्कृतिक प्रदेश

विस्तार : नागालैण्ड, मणिपुर, मिजोरम, मेघालय आदि.

धरातल : पर्वतीय-पहाड़ी, ढलान युक्त.

धर्म : आदिम जनजातीय, ईसाई, हिन्दू.

शारीरिक बनावट : छोटा कद, परन्तु गठीला शरीर, हाथ-पैर छोटे, नाक चपटी, आँखें उभरी हुई, पीत वर्ण.

प्रजाति : प्रधानतः प्रोटो-मंगोलॉयड प्रजाति. प्रमुख जनजाति - नागा, लुशाई, खासी, कनियाक

विशेषताएँ : 1. इन प्रजातियों में आज भी परंपरागत मूल्यों की प्रधानता है.

2. इनकी भाषा की उत्पत्ति तिब्बती-चीनी भाषा समूहों से हुई.

3. यह सांस्कृतिक प्रदेश अनेक भाषाओं का क्षेत्र है, परन्तु इनमें से अधिकांश भाषाओं की लिपि नहीं है.

4. यहाँ पर औपनिवेशिक संस्कृति का व्यापक प्रभाव पड़ा है (ईसाई मिशनरियों की धर्मांतरण में व्यापक भूमिका)

5. ईसाई संस्कृति का प्रभाव बढ़ता जा रहा है।

6. मध्य आदिवासीय सांस्कृतिक प्रदेश

विस्तार : झारखण्ड, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ का आदिवासी क्षेत्र.

धरातल : पहाड़ी एवं मैदानी, पतझड़ वनीय क्षेत्र.

धर्म : आदिम जनजातीय, ईसाई, हिन्दू.

शारीरिक बनावट : नाटा कद, श्याम वर्ण, चौड़ी एवं फूली नाक, आँखें तिरछी झुकी हुई, चौड़ा चेहरा, नाखून धँसे हुए छोटे एवं बालों की घुंघराली प्रवृति

प्रजाति : मुख्य प्रोटो-ऑस्ट्रेलॉयड प्रजाति, प्रमुख जनजातियाँ - संथाल, गोंड, मुण्डा, उराँव आदि पहाड़ी वनीय निवासी.

विशेषताएँ : यह सांस्कृतिक प्रदेश खनिज सम्पदा से सम्पन्न है, अतः यहाँ के लोग वन्य जीवन/उत्पाद के अतिरिक्त खनन एवं उद्योग से आजीविका चलाते हैं। कृषि एवं पशुपालन भी महत्वपूर्ण क्रिया-

कलाप है। प्रत्येक समाज का मुखिया उसके सामाजिक मूल्यों के निर्धारक होते हैं। व्यक्तियों का संकेन्द्रण भी मुखिया-आवास के इर्द-गिर्द रहता है। खनन तथा औद्योगिक विकास के परिणामस्वरूप सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीति-चेतना में वृद्धि हुई है। झारखण्ड एवं छत्तीसगढ़ राज्य का गठन इसी राजनीतिक चेतना का परिणाम है। इसके अतिरिक्त, आर्थिक विकास के तदनुरूप इनके परम्परागत मूल्यों में गिरावट की प्रवृत्ति उभर कर सामने आने लगी है। संथाल, उराँव एवं मुण्डा जनजाति पर ईसाई संस्कृति तथा भील एवं गोंड पर हिन्दू संस्कृति का प्रभाव बढ़ रहा है।

7. हिन्दू-द्राविड़ियन सांस्कृतिक प्रदेश

विस्तार: कर्नाटक, तमिलनाडु एवं आन्ध्र प्रदेश

धरातल: पठारी एवं समुद्रतटीय मैदान

धर्म: हिन्दू

शारीरिक बनावट: मध्यम कद, श्याम वर्ण, घुँघराले बाल की प्रवृत्ति। शारीरिक संरचना पर भौगोलिक वातावरण का प्रभाव

प्रजाति: इण्डो-आर्यन

विशेषताएँ: इस सांस्कृतिक प्रदेश में कन्नड़, तमिल एवं तेलुगु संस्कृति का सम्मिश्र देखने को मिलता है। तमिल एवं कन्नड़ में लुंगी एवं कुर्ता, कन्नड़ में पगड़ी इनकी विशिष्ट प्रतीक हैं। भाषा स्वतंत्र रूप से द्रविड़ भाषा के रूप में विकसित हुई है जिसका आर्यन भाषा से संबंध नहीं है। कृषि एवं मत्स्य प्रमुख व्यवसाय है परन्तु इस पर औद्योगिकीकरण एवं आधुनिकता का व्यापक प्रभाव पड़ा है।

8. मलयालम सांस्कृतिक प्रदेश

विस्तार: मालाबार तटीय क्षेत्र (केरल)

धरातल: पर्वतीय एवं समुद्रतटीय

धर्म: ईसाई, मुस्लिम, हिन्दू

शारीरिक बनावट: मध्यम कदीय श्याम वर्ण, घुँघराले बाल। संरचना पर सामुद्रिक वातावरण का स्पष्ट प्रभाव।

प्रजाति: प्रोटो-ऑस्ट्रेलॉयड, जनजाति- इरुला

विशेषताएँ: इस सांस्कृतिक प्रदेश में प्राचीन काल में ही अरब व्यापारियों का आगमन हुआ था। पुनः पश्चिमी यूरोपीय लोगों का सर्वप्रथम आगमन इसी प्रदेश में हुआ था। अतः इस सांस्कृतिक प्रदेश में हिन्दू के अतिरिक्त इस्लाम तथा ईसाई संस्कृति का व्यापक प्रभाव पड़ा है जिसका स्पष्ट प्रभाव लोगों की धार्मिक संरचना, रीति-रिवाज, परिधान, मनोवृत्ति, वाह्य गमन आदि में दिखाई पड़ता है। सर्वाधिक साक्षर सांस्कृतिक प्रदेश, परन्तु महिलाओं पर सर्वाधिक अपराध भी। समुद्रगामीन संस्कृति। मुख्य भोजन- चावल-मछली, नारियल, गरम मसाले एवं प्राकृतिक चिकित्सा के लिए प्रसिद्ध।

Scanned with CamScanner

9. ईसाई प्रधान गोआ सांस्कृतिक प्रदेश.

विस्तार : गोआ प्रांत
धरातल : समुद्रतटीय, पश्चिमी घाट पर्वत एवं कोंकण मैदानी क्षेत्र
धर्म : ईसाई
शारीरिक बनावट : मिश्रित प्रकार के, औसतन ऊँचाई, साफ वर्ण
प्रजाति : प्रोटो-आस्ट्रेलॉयड
विशेषताएँ : 1. पुर्तगाली संस्कृति का अनुसरण.
2. जीवन-पद्धति, धर्म, आस्था, भवन-संरचना आदि सभी पर ईसाई संस्कृति पर प्रभाव.
3. पुलिन तट के लिए प्रसिद्ध
4. विकसित पर्यटन उद्योग
5. कृषि-मत्स्य एवं पर्यटन अर्थव्यवस्था का आधार.

भारत एक प्राचीन विरासत, परम्पराओं एवं मान्यताओं वाला देश है, जहाँ पर विभिन्न कालों के दौरान विदेशज लोगों का आगमन हुआ है। भारतीय संस्कृति की नमनीयता के कारण इसने ना केवल उन विदेशजों को आत्मसात कर लिया बल्कि जो अपनी विशिष्टता कायम रखना चाहते थे, उन्हें अक्षुण्ण भी रहने दिया। उसे अपने साथ समाहित करने के स्थान पर उसकी पहचान को मान्यता प्रदान किया जिससे सांस्कृतिक विविधता स्थापित हो सकी। सभी संस्कृति अपनी विशिष्टता के साथ पुष्पित एवं पल्लवित हुए। सभी के मध्य एक-दूसरे के प्रति सम्मान के साथ सहयोगात्मक एवं सह-अस्तित्व का प्रबल भावना कायम रही, जिससे भारत संस्कृतियों की पच्चीकारी बन गया।

Scanned with CamScanner

भारत का सांस्कृतिक प्रदेश

प्राचीन विभाजन

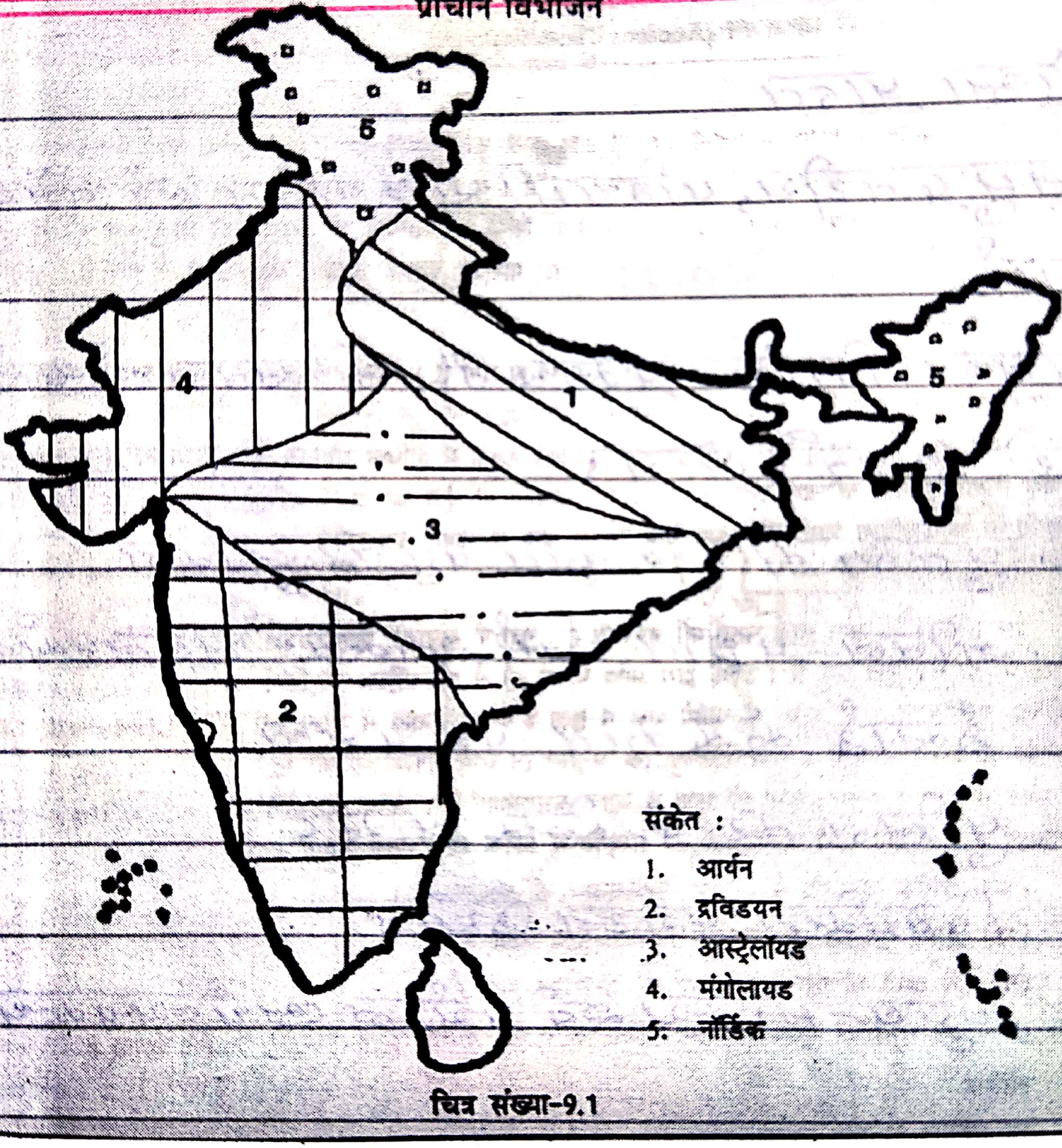

चित्र संख्या-9.1

Scanned with CamScanner

भारत का सांस्कृतिक प्रदेश

[आधुनिक विभाजन]

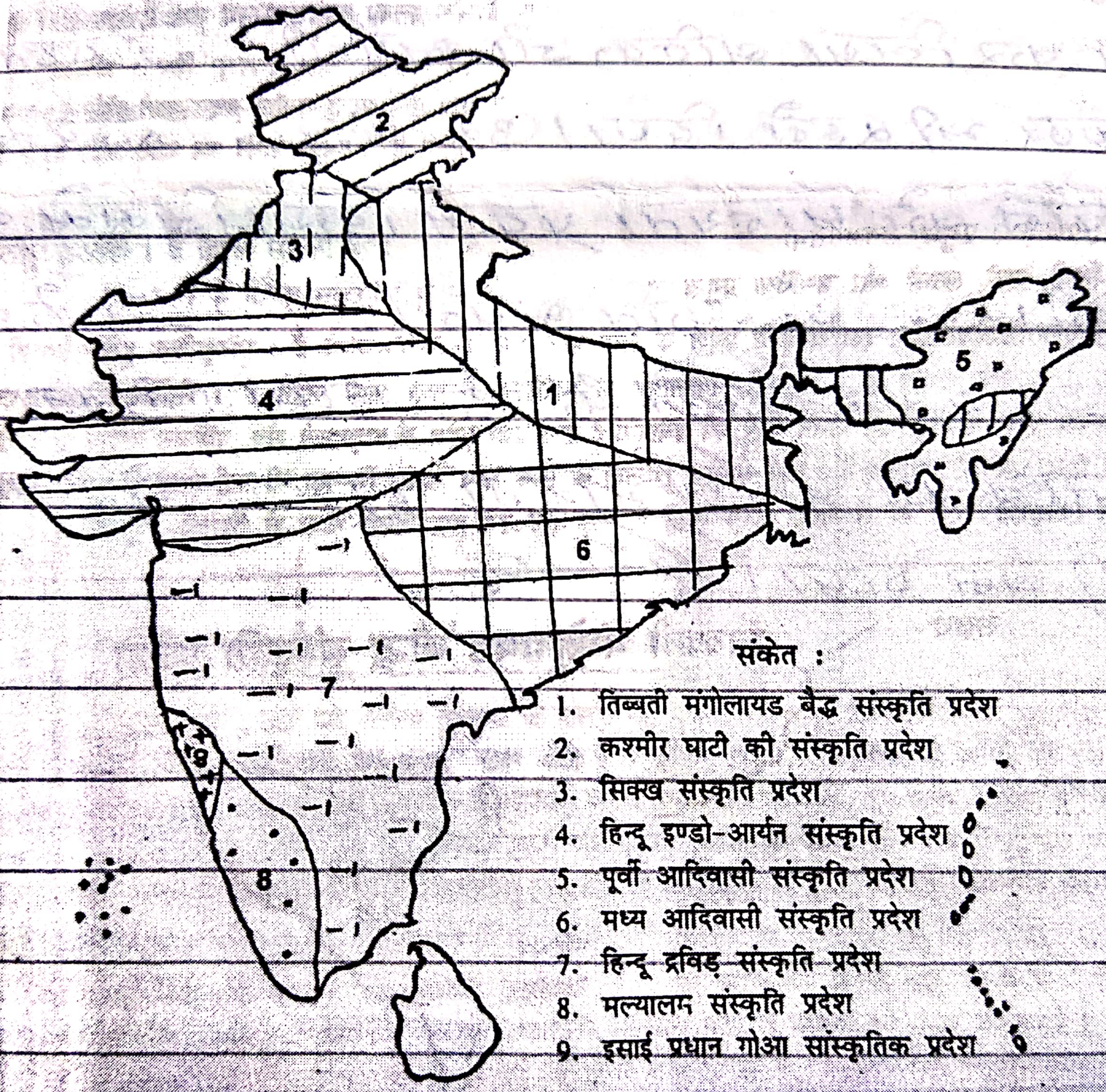

संकेत :

1. तिब्बती मंगोलायड बैद्ध संस्कृति प्रदेश
2. कश्मीर घाटी की संस्कृति प्रदेश
3. सिक्ख संस्कृति प्रदेश
4. हिन्दू इण्डो-आर्यन संस्कृति प्रदेश
5. पूर्वी आदिवासी संस्कृति प्रदेश
6. मध्य आदिवासी संस्कृति प्रदेश
7. हिन्दू द्रविड़ संस्कृति प्रदेश
8. मल्यालम संस्कृति प्रदेश
9. इसाई प्रधान गोआ सांस्कृतिक प्रदेश

चित्र संख्या-9.2

Scanned with CamScanner

सिक्ख संस्कृति प्रदेश

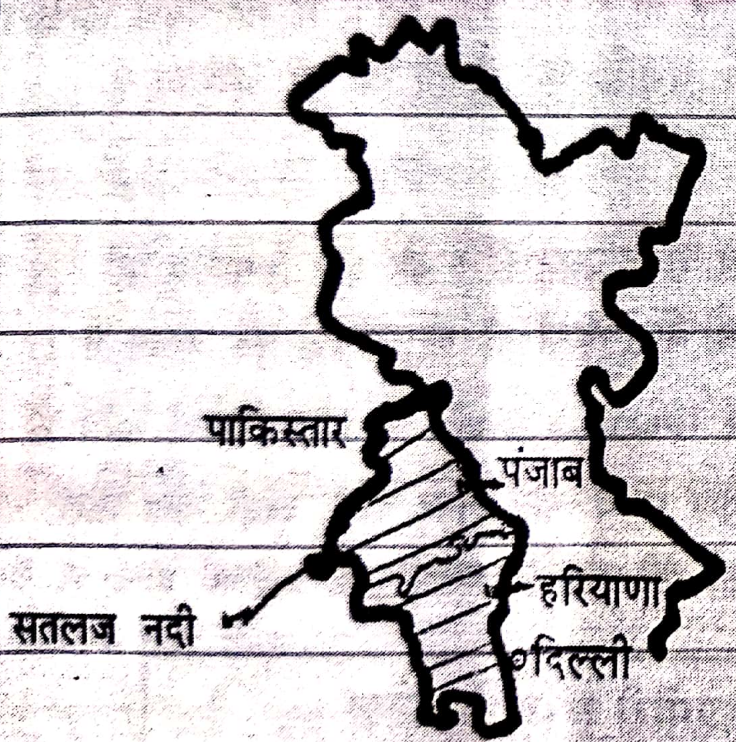

चित्र संख्या-9.5

कश्मीरी संस्कृति प्रदेश

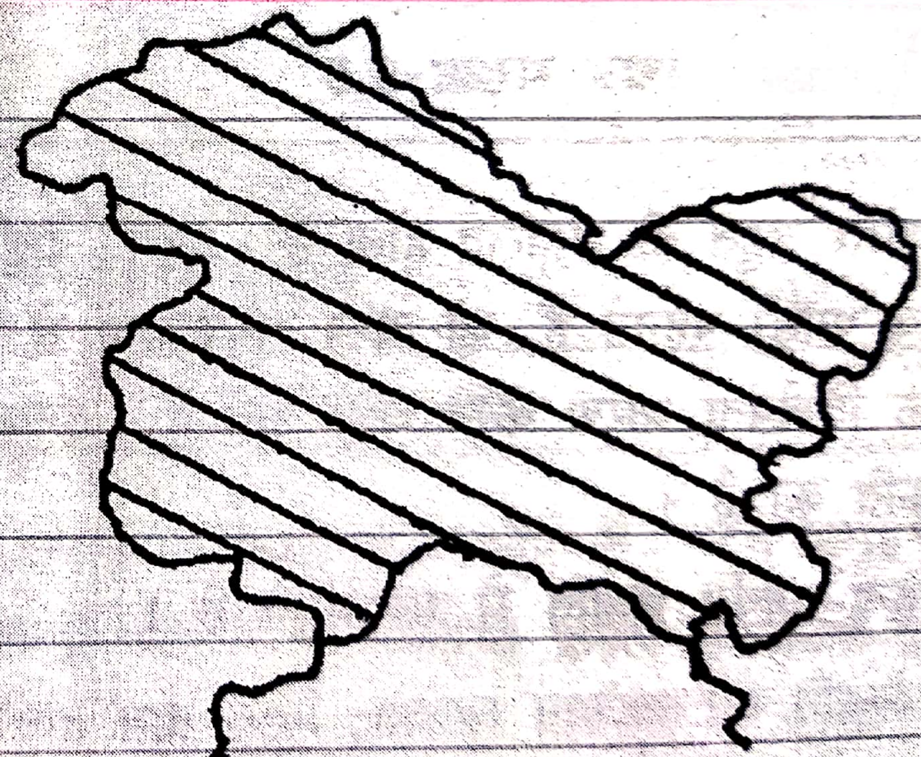

चित्र संख्या-9.4

Scanned with CamScanner

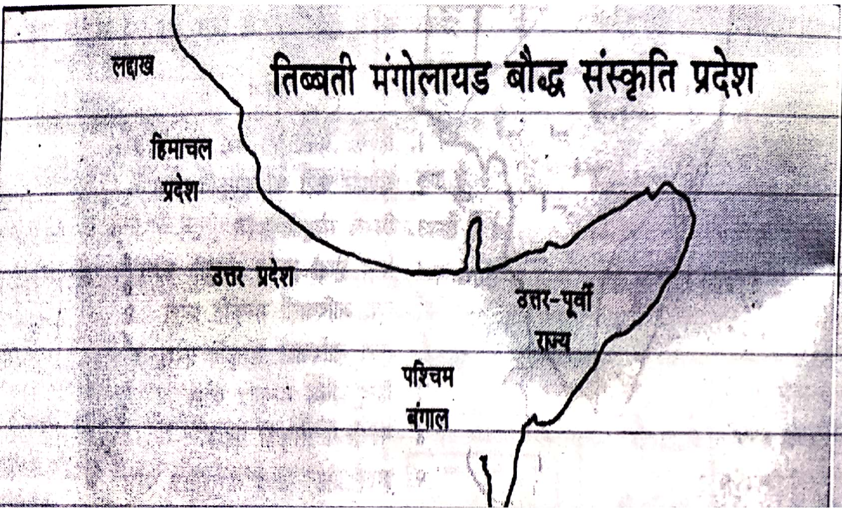

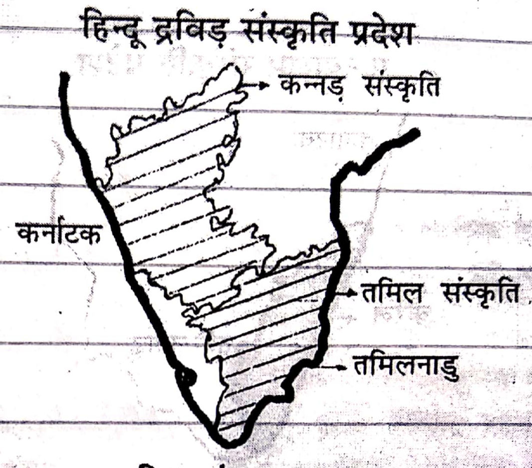

चित्र संख्या-9.9

Scanned with CamScanner

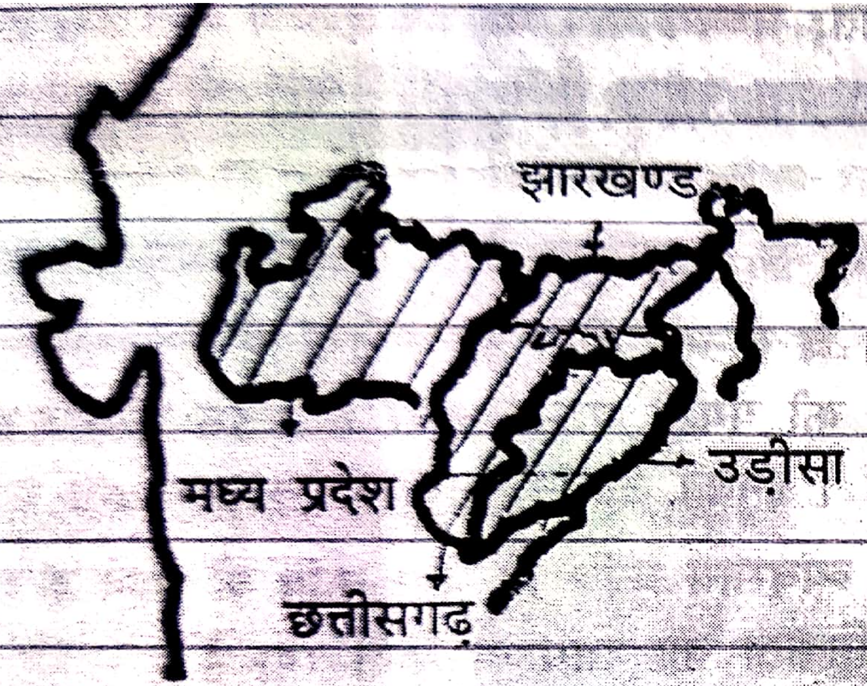

मध्य अदिवासी संस्कृति प्रदेश

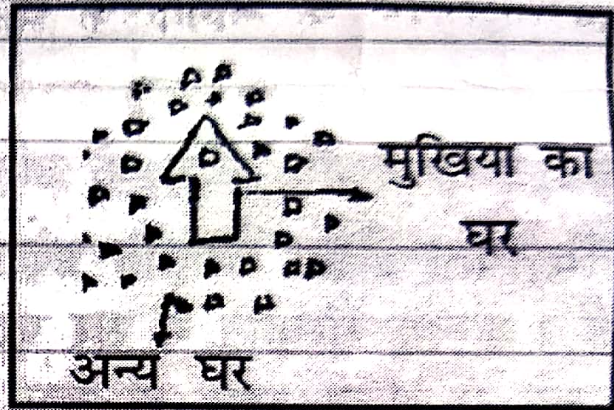

सांस्कृतिक विशेषता :–

मुखिया के घर के चारों ओर स्थित आवास

Scanned with CamScanner

मलयालम संस्कृति प्रदेश

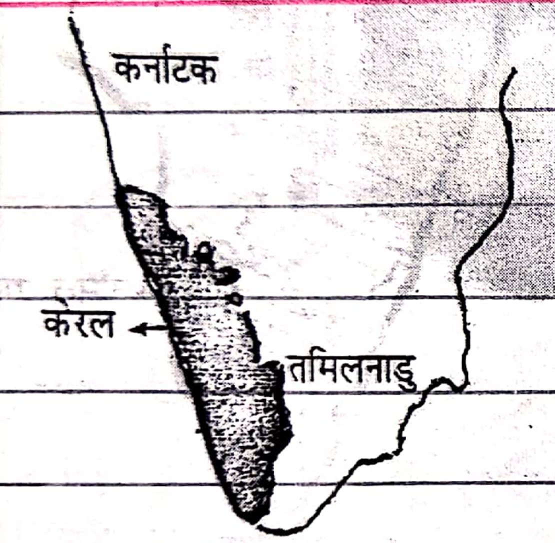

चित्र संख्या-9.10

गोआ संस्कृति प्रदेश

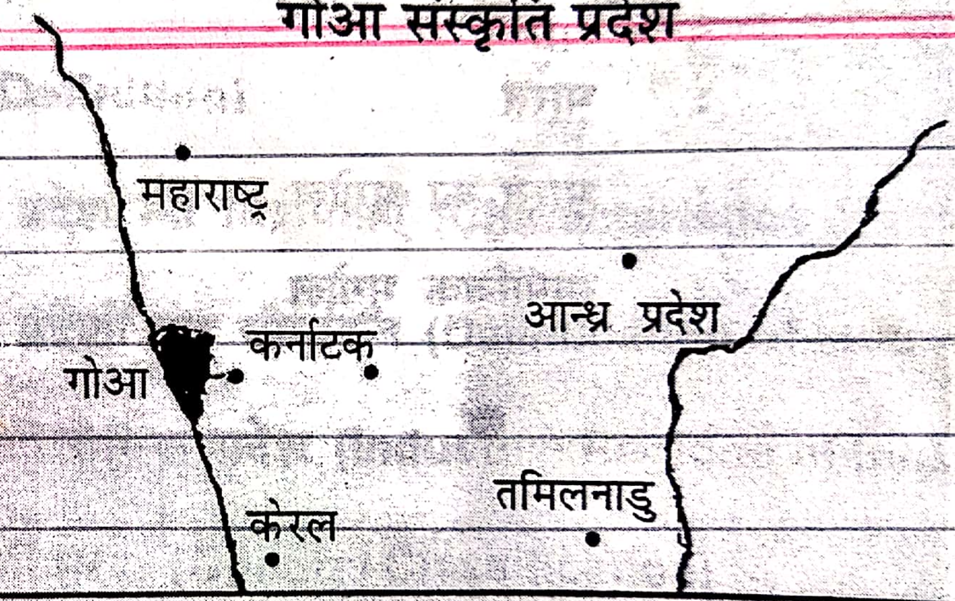

चित्र संख्या-9.11

Scanned with CamScanner

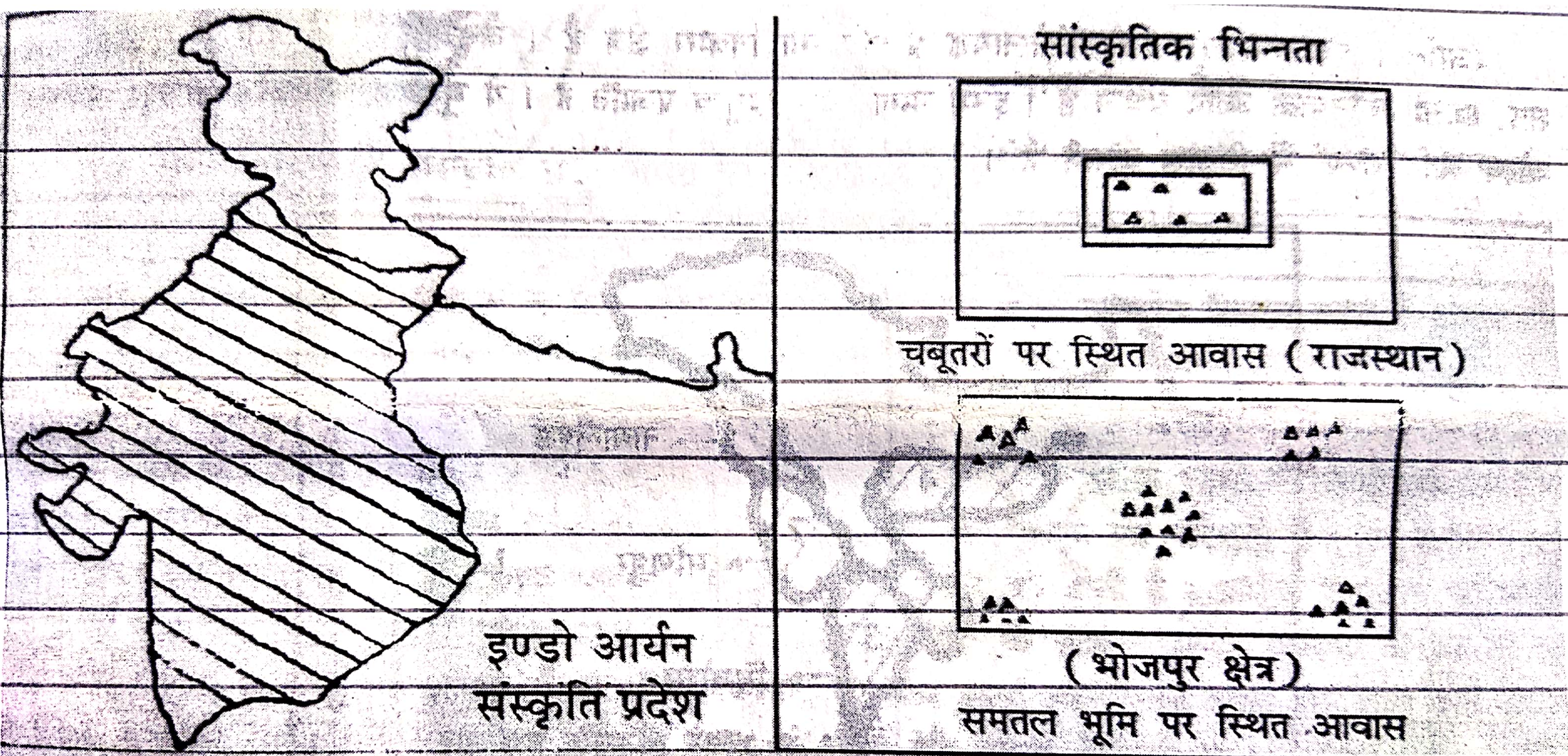

चित्र संख्या-9.6

Scanned with CamScanner